पाठ-४ गति

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर ☎ 99260-40137

गति

जीव की अवस्था-
विशेष को गति कहते हैं

गतियाँ कितनी होती हैं?

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

चार गतियाँ कौन-सी हैं?

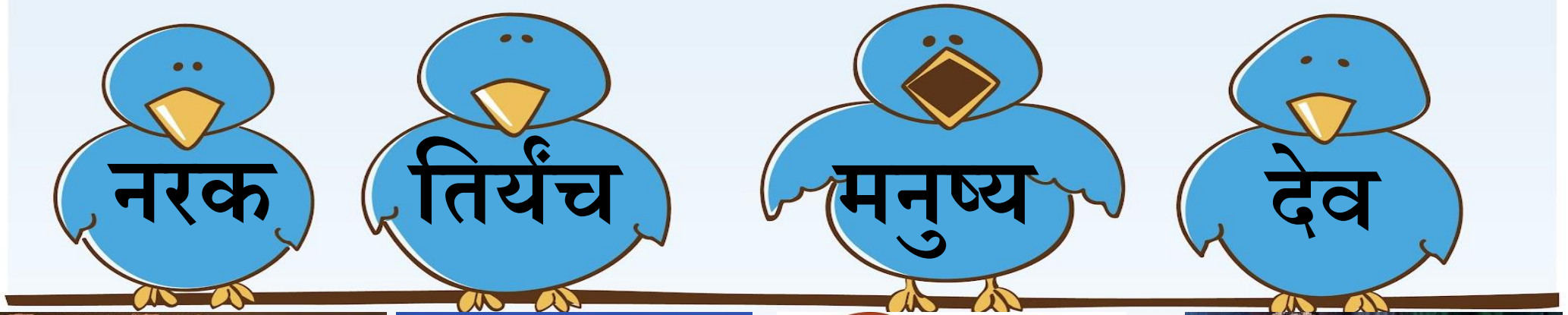

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

हम सभी कौन हैं?

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

हम मनुष्य हैं कि आत्मा ?

हम मनुष्य गति में हैं
इसलिए मनुष्य कहलाते हैं

हैं तो हम सभी
आत्मा

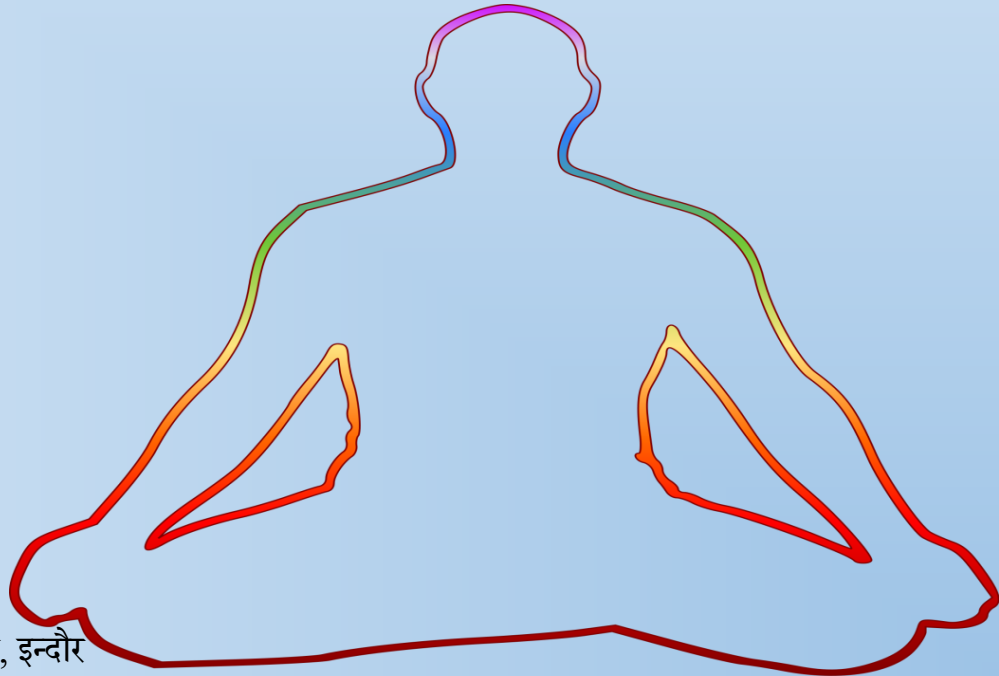

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

मनुष्य गति किसे कहते हैं?

जब कोई जीव कहीं से मरकर मनुष्य-शरीर धारण करता है, तो उसे मनुष्य कहते है ।

जैसे - हम सभी

तिर्यंच गति किसे कहते हैं?

जब कोई जीव कहीं से मरकर तिर्यंच-शरीर धारण करता है, तो उसे तिर्यंच कहते हैं

तिर्यंच कौन-कौन हैं?

- हाथी,शेर,कबूतर आदि पशु-पक्षी
- मच्छर, तितली, भौंरा, मक्खी
- चींटी, जू , लीख, मकोड़ा
- लट , शंख, सीप, केंचुआ
- पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु,वनस्पति – पेड़-पौधे

एकेन्द्रिय जीव कौन-कौन हैं?

वायु

पृथ्वी

अग्नि

वनस्पति

जल

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

वनस्पति के भेद

एक शरीर
एक स्वामी

प्रत्येक

जैसे - लौकी

एक शरीर
अनंत स्वामी

साधरण
(निगोद)

जैसे - आलू

नरक गति किसे कहते हैं?

- जब कोई जीव कहीं से मरकर नारकी का शरीर धारण करता है,तो उसे नारकी कहते हैं
- जिनको रति (प्रीति) न हो, न स्वयं से, न दूसरों से

नारकी कहाँ रहते हैं?

- पृथ्वी के नीचे ७ पृथ्वी हैं,
- वहाँ ८४ लाख बिलों में रहते हैं

नारकियों के दुःख

- जन्मते ही औन्धे मुख गिरकर उछलना
- उत्पन्न होते ही कुत्तों की तरह लड़ना
- परस्पर में निरंतर दुःख देना
- अत्यंत दुर्गन्धित नरक बिलों में रहना
- अत्यन्त भयानक एवं अनेक रोगों से व्याप्त शरीर होना
- करोड़ों बिच्छू एक साथ काटने जैसी वेदना

नारकियों के दुःख

- निरंतर मारकाट के भयानक शब्द सुनना
- शीत-उष्ण की वेदना
- भूख-प्यास की वेदना
- सेमर वृक्ष की वेदना
- वैतरणी नदी की वेदना
- असुरों द्वारा दुःख देना एवं भिड़ाना
- तीव्र कषाय की वेदना

नारकियों के द्वारा परस्पर दिए जाने वाले दुःख

1. गर्म लोहमय रस पिलाना
2. अग्निरूप लाल तप्त लोहे के खम्भों से आलिंगन कराना
3. कूट-शाल्मलि वृक्ष के ऊपर चढ़ाना-उतारना
4. लोहमय घनों से पीटना
5. वसूले से छीलना
6. चमड़ी उतारना
7. गर्म तेल से नहलाना
8. लोहे के गर्म कड़ाहों में पकाना
9. भाड़ में सेंकना
10. घानी में पेलना
11. शूली पर चढ़ाना
12. भाले से बींधना
13. करोंत से चीरना
14. अंगारों पर लिटाना
15. गर्म रेत पर चलाना
16. वैतरणी में स्नान कराना

नारकियों के द्वारा परस्पर दिए जाने वाले दुःख

17.तलवार जैसे पत्तों के वन में प्रवेश कराना

18.व्याघ्र, रीछ, सिंह, श्वान, सियार, सियारनी, बिलाव, नेवला, सर्प, कौवा, गीध, चमगादड, उल्लू, बाज आदि बनकर एक-दूसरे को अनेक प्रकार के दुःख देना

19.विक्रिया से शस्त्र बनकर मारना, काटना, छेदना, भेदना आदि

20.दूर से देख क्रोध करना

21.थोड़े पास आने पर क्रोध से भरे वचन कहना

22.पास आने पर मारना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

पाप का फल भोगने के लिये नरक गति है,

पुण्य का फल भोगने के लिये देवगति

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

देव गति किसे कहते हैं?

जब कोई जीव कहीं से मरकर देव का शरीर धारण करता है, तो उसे देव

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

जीव गतियों में घूमता ही क्यों है ?

अपराध करेगा तो सजा तो भोगनी ही पड़ेगी !

किस अपराध के फल में कौन-सी गति मिलती है?

नरक गति जाने का कारण

- बहुत आरम्भ, बहुत परिग्रह
- बहुत =अधिक और तीव्र परिणाम
- आरम्भ =हिंसादि पाप-पोषक क्रियाएँ
- परिग्रह =ममत्व परिणाम

नरक गति जाने का कारण

सात व्यसन

- माँस-भक्षण
- जुआ
- मदिरापान
- वेश्या गमन
- शिकार खेलना
- पर स्त्री-सेवन
- चोरी

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

नरक गति जाने का कारण

मिथ्यात्व=उल्टी मान्यता

तिर्यंच गति जाने का कारण

मायाचारी = छल-कपट

मनुष्य गति जाने का कारण

- अल्प(कम) आरम्भ, अल्प परिग्रह
- स्वभाव की सरलता =

सहज मंद कषाय - बनावटी नहीं

देव गति जाने का कारण

- सराग संयम = संयम के साथ का प्रशस्त राग
- संयमासंयम = संयम भी, असंयम भी

देव गति जाने का कारण

- बाल तप = अज्ञानता-सहित आचरण
- अकाम निर्जरा = बिना इच्छा दु:ख सहना

सबसे अच्छी गति कौन-सी है?

- मनुष्य गति सबसे अच्छी होनी चाहिये
- क्योंकि इससे ही मोक्ष की प्राप्ति होती है
- अच्छी होती तो सिद्ध जीव इसका त्याग क्यों करते?

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

पंचम गति है

इसलिये सबसे अच्छी गति कौन-सी हैं?

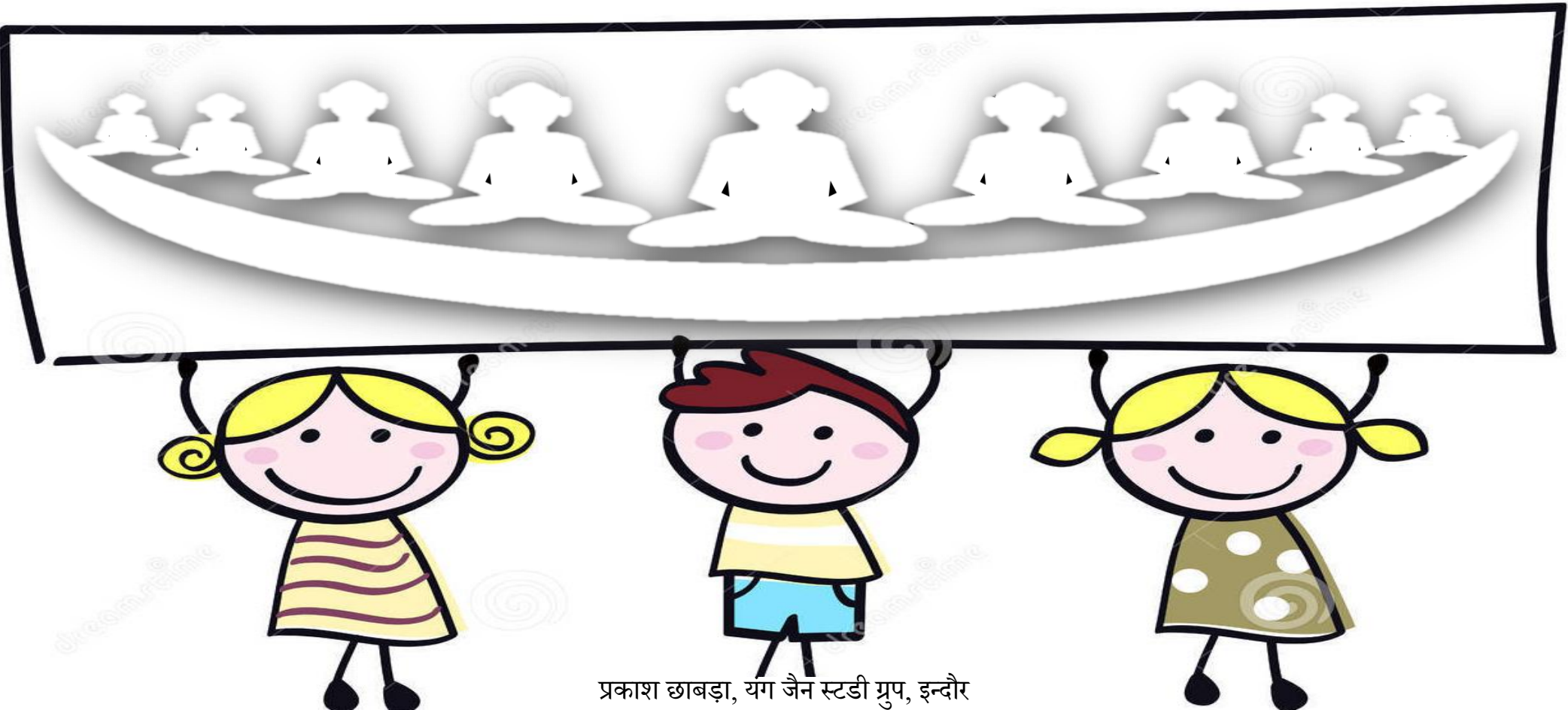

उसकी प्राप्ति कैसे हो?

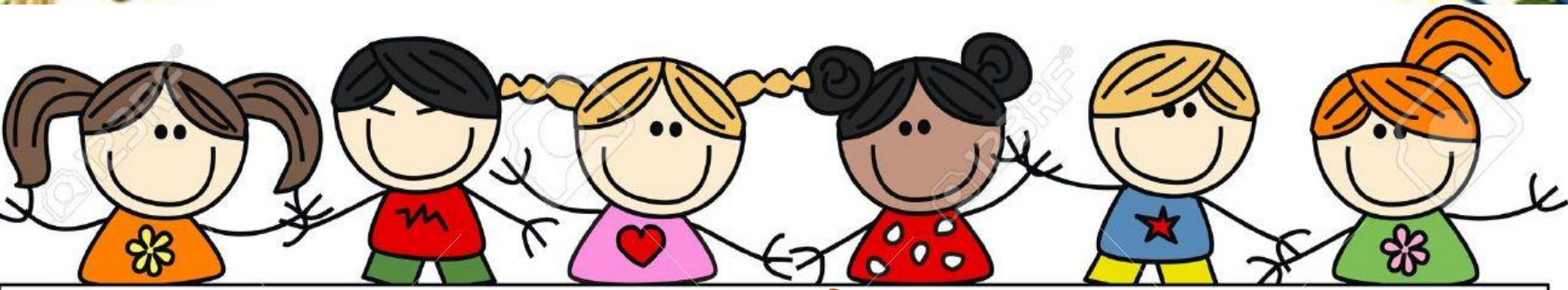

- अपनी आत्मा को पहचानकर
- उसकी साधना द्वारा
- चतुर्गति के दु:खों से छूटकर
- सिद्ध गति की प्राप्ति हो सकती है

पंचम गति
प्राप्त होती है

चार गति
के दुःखों
से छूटकर

सिद्ध
गति

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

निरपराध दशा क्या है?

- वीतराग भाव
- वही मोक्ष का कारण है

इन सबको जानने से क्या लाभ है?

- हम ये जान जायेंगे चारों गति में दु:ख ही हैं, सुख नहीं
- चार गति में भ्रमण के कारण शुभाशुभ भाव हैं
- इनसे छूटने का उपाय एक वीतराग भाव है